सुरेन्द्र स्निग्ध की कविताओं में युगबोध

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा

के

मानविकी संकाय (हिन्दी)

में

पीएच. डी. उपाधि हेतु

प्रस्तावित शोध–प्रारूप

2024

शोध पर्यवेक्षिका

डॉ० विनीता कुमारी

विभागाध्यक्ष

हिन्दी विभाग

डॉ. एल. के. वी. डी. कॉलेज, ताजपुर, समस्तीपुर

शोधार्थी

बबिता कुमारी

NET, JRF

क्रमांक– BR04600116

पैट क्रमांक– E2209003

हिन्दी विभाग

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा

पीएच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध–प्रारूप

मानविकी संकाय (हिन्दी)

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा

1. शोध–शीर्षक का नामः–

सुरेन्द्र स्निग्ध की कविताओं में युगबोध

2. प्रस्तावना (शोध के मुद्दे / समस्या):–

साहित्य समाज का दर्पण है। साहित्य की यही दर्पणधर्मिता किसी लेखक के कृतिगत युग–चित्रण का मूलाधार हुआ करती है। साहित्य का युगबोध से प्रत्यक्ष सम्बन्ध रहता है। वास्तव में साहित्य युगबोध की ही अभिव्यक्ति होता है। युगबोध साहित्य की पृष्ठभूमि, चेतना और परिणति सभी स्तरों को प्रभावित करता दिखायी देता है। इसी कारण आधुनिक साहित्य की समीक्षा में प्रायः आधुनिकता, आधुनिक बोध, युगबोध, युग–चित्रण, युग–चेतना, समकालीनता, समकालीन बोध, समसामयिकता इत्यादि शब्दों का प्रचुर प्रयोग देखने को मिलता है। साहित्य में विशेषतः कथा साहित्य, नाट्य–साहित्य की आलोचना करते समय जिन परम्परागत तत्त्वों का आश्रय ग्रहण किया जाता है, उनमें देशकाल और वातावरण वाले तत्त्व का प्रत्यक्ष सम्बन्ध हमें 'युगबोध' से जान पड़ता है। वस्तुतः युगबोध से ही साहित्यकार का मूल्य बोध तीखा होता है। साहित्यकार की रचना का आधार ऐतिहासिक या युग–जीवन की घटनाएँ होती हैं। साहित्यकार समकालीन जीवन और परिवेश के अनुभवों को चेतना के स्तर पर ग्रहण कर जिस चिन्तन को साहित्य में स्थान देता है, वही युगबोध है।

युगबोध किसी भी कवि का वह विचार है या विचारधारा है, जो वह अपने समय एवं परिवेश से अर्जित करता है और उसी के आलोक में सृजन हेतु सक्रिय होता है। युगबोध ही वह कसौटी है जिसके जरिये कवि अपने समय के यथार्थ को पहचानता है। बाहर का यथार्थ कवि के मन पर अंकित हो जाता है और वह उसे

वाणी देने का प्रयास करता है। कविताएं व्यक्ति चेतना की सच्ची साक्षी होती हैं, उनमें युगबोध एवं युगीन यथार्थ की सच्ची अभिव्यक्ति होती है।

बिहार में समकालीन हिन्दी कविता के प्रगतिशील कवि के रूप में सुरेन्द्र स्निग्ध की पहचान बनी है। वे एक संवेदनशील कवि, प्रखर आलोचक, प्रतिबद्ध संस्कृतिकर्मी थे। वे मार्क्सवादी विचारधारा के कवि थे। वे सामाजिक विषमताओं पर हर वक्त विमर्श करने के लिए तैयार रहते थे। स्निग्ध जी की कविताओं में ग्रामीण क्षेत्रों का दृश्य दिखाई देता है। ये बिहार के पिछड़े अंचल के ग्रामीण दशा को बड़े ही मार्मिक ढंग से लिखते हैं। इनकी कविताओं में सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक चेतना के स्वर दिखाई देते हैं। सुरेन्द्र स्निग्ध का पूरा व्यक्तित्व विद्रोही था। यह उनकी जीवनयात्रा से प्रतिध्वनित होता है। उनका जीवन बेहद संघर्षपूर्ण था, वे समतामूलक समाज, न्याय के पक्षधर थे। सुरेन्द्र ऊपर से कठोर लेकिन अंदर से बेहद संवेदनशील और कोमल थे। वे हमेशा गरीब, शोषित समाज के वंचित लोगों के साथ जीवंत जुड़ाव बनाए रखते थे। वे हमेशा दूसरों की मदद करने के लिए हमेशा तत्पर रहा करते थे।

सुरेन्द्र स्निग्ध की कविताओं की विशिष्टता यह है कि उनमें चरवाहा संस्कृति या गौचारिणी संस्कृति की कविताएँ भी मौजूद है। यह उनकी काव्य चेतना को एक नया और अलग पहचान देनेवाला तत्व है। जब वे चरवाहा संस्कृति पर केन्द्रित करके कविताएँ लिखते है तो उनकी भाषा और भाव की गहराई को स्पष्टता से देखा जा सकता है। इनकी कविताओं में खेती किसानी और गाँव देहात के कुछ आधुनिक बिम्ब भी दिखते है। इन बिम्बों के जरिये वे अपने समय के सामाजिक, सांस्कृतिक इतिहास को रचते है। इन्हीं छोटे–छोटे सन्दर्भों से सुरेन्द्र स्निग्ध की कविताओं का विराट रूप उभरता है।

साहित्य के सन्दर्भ में उसके रूप से पृथक जब भी उस के अंर्तवस्तु की बात होगी तो युगबोध का सन्दर्भ उभरकर सामने आएगा। साहित्यकार के सन्दर्भ में युगबोध समसामयिक परिस्थितियों में अवस्थित साहित्यकार के काल और परिवेश की राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों की जाँच पड़ताल की जाती है। साहित्य की सृजन की प्रक्रिया में युगबोध की महत्व को

स्वीकार किया जाता रहा है। यह कहा जाता है कि कलात्मक और साहित्यिक रचनाएँ युगबोध की निर्मित होती है और उसे प्रकट भी करती है।

सुरेन्द्र स्निग्ध की साहित्यिक व्यक्तित्व ही अपनी युगबोध का निर्मित है। प्रस्तावित शोध–कार्य में सुरेन्द्र स्निग्ध के रचनात्मक निर्माण में उनके युगबोध का विवेचन किया जाएगा।

3. पूर्व अध्ययन (साहित्यिक सर्वेक्षण):–

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन शोधकर्ता को उसके शोध क्षेत्र के सामयिक ज्ञान एवं स्थिति से परिचित कराता है जिसका उसे अध्ययन करना होता है। अध्ययन क्षेत्र से सम्बन्धित पुस्तकें, लेख, प्रतिवेदन, पत्र एवं पत्रिकाएं, उद्धरण स्रोत, शोध प्रबन्ध, अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशन एवं विश्वकोष आदि सामग्रियां सम्बन्धित साहित्य के रूप में उपयोग में लायी जा सकती है, जिनके समग्र अध्ययन के पश्चात् ही अनुसंधानकर्ता अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के साधन एवं मार्ग को खोजने में सफल हो सकता है। इससे स्पष्ट होता है कि सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण अत्यन्त आवश्यक है। प्रस्तावित शोध–कार्य से संबंधित साहित्य की समीक्षा इस प्रकार है:– प्रसिद्ध नारायण चौबे (2006), नयी कविता में युगबोध, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी; डॉ0 मृगेन्द्र राय (2008), हिन्दी काव्य नाटक और युगबोध, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दरियागंज दिल्ली; डॉ0 हरि निवास पाण्डेय (2000), प्रगतिशील काव्यधारा, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी; रामस्वरूप चतुर्वेदी (1991), हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद; एवं बलदेव वंशी (1986), समकालीन कविता : वैचारिक आयाम, इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, नई दिल्ली आदि शोध शीर्षक से संबंधित पूर्व अध्ययन की सामग्री है। प्रस्तुत शोध का विषय ''सुरेन्द्र स्निग्ध की कविताओं में युगबोध'' है। इस विषय पर शोध–कार्य बहुत ही कम हुए है, परन्तु उपरोक्त कार्यों के सहारे प्रस्तुत शोध–कार्य को संपादित करने में सहायता मिलेगी।

4. उद्देश्य, महत्त्व एवं प्रासंगिकता:–

युगबोध अपने समय की सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक परिस्थितियों के विषय में जानकारी होती है। इसीलिए साहित्यकार साहित्य

के माध्यम से ही अपने भावों और विचारों को दृष्टि प्रदान करता है। सुरेन्द्र स्निग्ध समकालीन हिन्दी कविता में ऐसे कवि थे, जो जैसा जीते थे, वैसा ही लिखते थे और वैसा ही दिखाई भी देते थे। यह बात दूसरी है कि जीने और रहने को दूरी पाटकर कवि–कर्म को सृजनात्मक गरिमा देने वाले संख्या में कम हैं। ऐसा ही कोई प्रतिबद्ध और संवेदनशील कवि हमारे बीच से चला जाता है तो लगता है, केवल कविता ही नहीं हमने वह कुछ अमूल्य और दुर्लभ खो दिया है, जिसकी भरपाई शायद ही हो। ऐसा इसलिए भी कि वह जितना अद्भुत कवि होता है, उतना ही प्यारा इन्सान–सर से पांव तक इन्सान, चाहे उसमें मानवीय अन्तर्विरोध भी हो। उनकी कविता उनका वास्तविक जीवन–बिम्ब है। उनकी कविताएँ इसलिए उनका ही जीवन–बिम्ब है कि वह सूरत–शक्ल और गर्ज–तर्ज वाले प्रतिबद्ध कवि नहीं थे। उनकी कविता में मंद से मंद स्वर में प्रेम, सौन्दर्य और संघर्ष को एक साथ ऐसे उकेर देती है कि पढ़ने और सुनने वालों की चेतना–तल तक उतर जाती है।

केन्द्र और परिधि सिर्फ समाज और राजनीति का प्रश्न नहीं है। यह साहित्य में भी व्याप्त है। साहित्य को भी अपनी दिल्ली, बनारस, भोपाल और उज्जैन है। कहने का आशय यह है कि साहित्य में भी केन्द्रीयता विद्यमान है। आचार्य नलिन विलोचन शर्मा ने 'साहित्य के इतिहास दर्शन' में गौण कवियों की प्रतिष्ठा दिलाने की बात कही थी। आचार्यवर का यही सूत्र इस शोध–कार्य के औचित्य को सिद्ध करता है।

केन्द्रीयता को झेलनेवाले और इससे जूझनेवाले ही इसकी पीड़ा को समझ सकते है। सुरेन्द्र स्निग्ध ने भी अपने जीवन–काल में इस कटु यथार्थ को भोगा था, इसीलिए बड़ी खीझ के साथ वे लिखते हैं कि "जीवन सिर्फ दिल्ली नहीं है बिडम्बना यह है कि दिल्ली के बाहर के रचनाकार अपनी स्वीकृति और पहचान के लिए दिल्ली की ओर टकटकी लगाए रहते है। दिल्ली में बैठे है कला, साहित्य और संस्कृति, और राजनीति के खेल के कुछ महारथी, कुछ शातिर और कुछ असली का चेहरा लगाए नकली जादूगर या मठाधीश। वही तय करते हैं कि साहित्य और

राजनीति से लेकर अन्य गतिविधियों को कौन सी दिशा दी जाय या उसकी किस दशा को प्रतिष्ठित या अप्रतिष्ठित किया जाय। फल यह होता हैं कि दिल्ली के बाहर के एशार्थ; जो प्रायः अवास्तविक होता है, प्रतिबिम्बित होने लग जाता है।" इस प्रकार साहित्य की केन्द्रीयता से असहमत कवि सुरेन्द्र स्निग्ध अपने हिस्से के अनुभवों एवं भावों को अभिव्यक्त करते हैं। उनकी अधिकांश कविताओं में बिहार एवं उसका पिछड़ा समाज तथा उसकी विविध अनुभूतियों की अन्तर्धारा विद्यमान है। प्रस्तावित शोध–कार्य का उद्देश्य सुरेन्द्र स्निग्ध की कविताओं में विद्यमान इन्हीं अन्तर्धाराओं का अवगाहन एवं अनुशीलन करना है।

5. ज्ञान के क्षेत्र में योगदानः–

किसी भी कवि के निर्मित में उसके युगबोध की प्रमुख भूमिका होती है। सुरेन्द्र स्निग्ध इसके अपवाद नहीं है। हिन्दी साहित्य में अखिल भारतीय स्तर पर न सही लेकिन बिहार के साहित्यिक पटल पर वे एक महत्वपूर्ण उपस्थिति दर्ज कराते हैं। अपनी प्रगतिशील काव्य चेतना में वे बिहार के साथ–साथ देश और काल की सुगंध भरते है। सुरेन्द्र प्रसाद यादव ने सुरेन्द्र स्निग्ध के नाम से कविताएँ लिखी है। एक कवि के रूप में उनका यथेवर मूल्यांकन नहीं हो सका। लेकिन काल निरवधि है और पृथ्वी विपुल है। जैसा भवभूति वाला विश्वास सुरेन्द्र स्निग्ध जी के साथ भी रखना होगा। आज स्निग्ध जी नहीं हैं, तो इस शोध कार्य की कोशिश यही है कि उनकी कृतियों का अनुसंधानपरक विवेचन किया जाय।

6. अध्ययन क्षेत्रः–

सुरेन्द्र स्निग्ध के सभी काव्य संग्रह अध्ययन के मुख्य क्षेत्र होंगे। इसके अतिरिक्त स्निग्ध जी की आलोचना जो विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं एवं आलोचनात्मक लेखों में आई हुई है, प्रस्तावित शोध–कार्य के निर्माण में उसका भी विशिष्ट योगदान होगा। सुरेन्द्र स्निग्ध के प्रमुख काव्य संग्रह निम्नलिखित हैं–

(1) पके धान की गंध (2) सबद सबद बहु अंतरा (3) कई कई यात्राएँ (4) माँ, कामरेड और दोस्त (5) रचते–गढ़ते (6) संघर्ष के एस्ट्रोटर्फ पर (7) प्रपद्यवाद और केसरी कुमार (8) अग्नि के इस लपेटे से कैसे बचाऊँ कोमल कविता। इनकी सभी काव्य संग्रहों की सहायता ली जाएगी।

7. अध्ययन–पद्धतिः–

प्रस्तावित शोध–कार्य के अध्ययन की दृष्टि विश्लेषणपरक होगा। प्रस्तावित शोध शोध–कार्य में रचनाकार के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को अच्छे ढंग से प्रस्तुत किया जाएगा। प्रस्तावित शोध–कार्य में सुरेन्द्र स्निग्ध के काव्य शिल्प, भाषा, प्रतीक, बिम्ब, व्यंग्य आदि को भी स्पष्ट किया जाएगा। मेरे अध्ययन का विधि विश्लेषणपरक होगा और इसी आधार पर अपनी मान्यताओं को स्थापित करने का प्रयास करूँगी।

8. स्रोत सामग्री की उपलब्धताः–

प्रस्तावित शोध कार्य के लिए स्थानीय पुस्तकालयों एवं शैक्षणिक संस्थानों में प्रचुर साहित्यिक साक्ष्य उपलब्ध हैं। उदाहरण के लिए ल0 ना0 मि0 विश्वविद्यालय, दरभंगा का केन्द्रीय पुस्तकालय, सी0 एम0 कॉलेज पुस्तकालय, दरभंगा, नगर स्थित लक्ष्मीश्वर पब्लिक लाइब्रेरी के समृद्ध भंडार तथा कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय के केन्द्रीय पुस्तकालय का उपयोग तथ्यों का वस्तुनिष्ठ एवं आलोचनात्मक विश्लेषण करने में किया जा सकता है।

9. परिकल्पनाः–

प्रस्तावित शोध–अध्ययन सुरेन्द्र स्निग्ध की कविताओं में युगबोध को चिहिन्त करते हुए उनकी कविताओं का आलोचनात्मक अनुशीलन किया जायेगा। इसमें सुरेन्द्र स्निग्ध की विचारधारा के साथ–साथ मूल्यांकन किया जाएगा।

10. शोध कार्य की योजनाः–

शोध कार्य को व्यवस्थित एवं वैज्ञानिक ढ़ंग से सम्पादित करने के लिए निम्नांकित कार्य–योजना का सहारा लिया जायगाः–

अध्याय – 1 :	परिचय
अध्याय – 2 :	सुरेन्द्र स्निग्ध का व्यक्तित्व एवं कृतित्व
अध्याय – 3 :	सुरेन्द्र स्निग्ध की कविताओं का मार्क्सवादी युगबोध
अध्याय – 4 :	सुरेन्द्र स्निग्ध की कविताओं का आँचलिक युगबोध
अध्याय – 5 :	सुरेन्द्र स्निग्ध की कविताओं का समसामयिक युगबोध
अध्याय – 6 :	उपसंहार

11. संदर्भ ग्रंथ–सूचीः–

(क.) आधार ग्रंथ–सूची

1. सुरेन्द्र स्निग्ध, पके धान की गंध (काव्य संग्रह) साहित्य संसद, जिया सराय, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण– 1992

2. सुरेन्द्र स्निग्ध, सबद सबद बहु अंतरा (काव्य संग्रह) राजदीप प्रकाशन, सी. 187 ज्वालापुरी, नं. 4, नागलोई, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण– 2000

3. सुरेन्द्र स्निग्ध, कई कई यात्राएँ (काव्य संग्रह) पुस्तक भवन, आर. जेड. 35 बी., गली नम्बर 1 ए, कैलाशपुरी एक्सटैंशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण– 2000

4. सुरेन्द्र स्निग्ध, अग्नि की इस लपेट से कैसे बचाऊँ कोमल कविता (काव्य संग्रह), नई संस्कृति प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण– 2005

5. सुरेन्द्र स्निग्ध, रचते गढ़ते (काव्य संग्रह), किताब महल, 28–ए, सरोजनी नायडू मार्ग, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण– 2008

6. सुरेन्द्र स्निग्ध, माँ, कामरेड और दोस्त, (काव्य संग्रह) विजया बुक्स सुभाष पार्क, गली नं. 3, नवीन शाहदरा दिल्ली, प्रथम संस्करण–2014

7. सुरेन्द्र स्निग्ध, संघर्ष के एस्ट्रोटर्फ पर (काव्य संग्रह) अभिधा प्रकाशन, रामदयालु नगर मुजफ्फरपुर, प्रथम संस्करण–2016

(ख.) संदर्भ सूची

1. डॉ0 नगेन्द्र : आधुनिक हिन्दी कविता की मुख्य प्रवृत्तियाँ, प्रथम संस्करण 1951, गौतम बुक डिपो, दिल्ली–07.

2. शिव कुमार मिश्र : आधुनिक कविता और युग दृष्टि, प्रथम संस्करण–1966, विद्यामंदिर, बुलानाला, वाराणसी।

3. लक्ष्मीकांत वर्मा : नये प्रतिमान : पुराने निकाय, संस्करण–1966, भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी।
4. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय : बीसवीं शताब्दी हिन्दी साहित्य : नये सन्दर्भ, प्रथम संस्करण–1966, साहित्य भवन, इलाहाबाद।
5. उमेशचन्द्र मिश्र : प्रगतिवादी काव्य, संस्करण–1966, रामबाग, कानपुर।
6. वामन शिवराम आप्टे : संस्कृत हिन्दी कोश, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी–1969,
7. केदारनाथ सिंह : आधुनिक हिन्दी कविता में बिम्ब–विधान का विकास, संस्करण–1971, भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी।
8. डॉ0 अवध नारायण त्रिपाठी : नयी कविता में वैयक्तिक चेतना, प्रथम संस्करण–1973, पचौरी प्रेस, मथुरा।
9. लक्ष्मीकांत वर्मा : नयी कविता के प्रतिमान, संस्करण–1975, भारतीय प्रेस, इलाहाबाद।
10. डॉ0 राजेन्द्र पाण्डेय : भारत का सांस्कृतिक इतिहास, संस्करण–1976, उत्तर प्रदेश हिन्दी ग्रन्थमाला अकादमी, लखनऊ।
11. डॉ0 बच्चन सिंह : आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास, प्रथम संस्करण–1978, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
12. रामदरश मिश्र : हिन्दी कविता, आधुनिक आयाम, संस्करण–1978, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।

शोध पर्यवेक्षिका
डॉ० विनीता कुमारी
विभागाध्यक्ष
हिन्दी विभाग
डॉ. एल. के. वी. डी. कॉलेज, ताजपुर, समस्तीपुर

शोधार्थी
बबिता कुमारी
NET, JRF
क्रमांक– BR04600116
पैट क्रमांक– E2209003
हिन्दी विभाग
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा